Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **कालीबंगा I (Note 2)**

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

कालीबंगा । (Note 2)

कालीबंगा में कृषि से संबंधित कई साक्ष्य प्राप्त किए गए हैं, जिससे पता चलता है कि यहां के लोगों के जीविकोपार्जन का मुख्य साधन खेती था। यहां सबसे प्राचीन जुता हुआ खेत मिला है जिसके कूंडों के बीच का फासला पूर्व से पश्चिम की ओर 30 सेमी है और उत्तर से दक्षिण 1.10 मीटर है। कम दूरी के खातों में चना एवं अधिक दूरी के खांचों में सरसों बोई जाती थी।यहां मिट्टी के कई खिलौने मिले हैं, जिनमें बैलगाड़ी, पहिए, बैल की खण्डित मूर्ति व सिलबट्टा आदि शामिल हैं। साथ ही कुछ पत्थर व तांबे के दैनिक उपकरण भी प्राप्त किए गए हैं। जिससे पता चलता है कि उस समय के लोगों को धातुओं की भी जानकारी थी।

कालीबंगा में शवदाह से संबंधित साक्ष्य प्राप्त किए गए हैं, जिससे पता चलता है यहां के लोग इंसानी जीवन के विभिन्न कालों से पूर्ण रूप से परिचित थे। पुरातत्व खुदाई के दौरान यहां 34 कब्र के होने का पता चला है।

कालीबंगा के दक्षिण- पश्चिम में कब्रिस्तान स्थित था।यहां से शव विसर्जन के 37 उदाहरण मिले हैं। पुरातत्व सर्वेक्षण से यह भी पता चला है कि यहां शवदाह की तीन विधियां प्रचलित थी। एक पूर्व समाधिकरण दूसरा आंशिक समाधिकरण व तीसरा दाह संस्कार। जिससे पता चलता है कि यहां के लोग विभिन्न रीति रिवाजों व संस्कृति का अनुसरण करते थे। यहां पर बच्चे की खोपड़ी मिली हैं जिसमें 6 छेद हैं, इसे जल कपाली या मस्तिष्क शोध के बीमारी का पता चलता है। यहां से कंकाल मिले हैं जिसके बाएं घुटने पर किसी धारदार कुल्हाड़ी से काटने का निशान है। यहां से भूकंप के प्राचीनतम साक्ष्य के प्रमाण मिले हैं ।

कालीबंगा की बर्बादी का कारण।

* कालीबंगा से प्राप्त भूकंप के साक्ष्यों से पता चलता है, कि यह नगर बुरी तरह प्राकृतिक आपदा का शिकार हुआ था।

* गर्मी का बढ़ना और धग्गर का सूख जाना- डी.पी.

अग्रवाल, सूद और अमलानन्द घोष का मत।

*नदी का मार्ग परिवर्तन- इस विचार के जनक माधोस्वरूप वत्स हैं।

* डल्स महोदय का मानना है कि धग्गर नदी के मार्ग बदलने का कारण ही कालीबंगा का पतन हुआ है।

कुल मिलाकर ऐसा माना जाता है कि प्राचीन घग्घर नदी के सूख जाने से इस नगर का विनाश हुआ। यहां के पहले टीले पर उजड़े हुए मकान, आंगन, भोजनगृह आदि के कई साक्ष्य मिले हैं। दूसरे टीले पर दैनिक इस्तेमाल की कई वस्तुओं के साक्ष्य प्राप्त किए गए हैं जैसे मिट्टी के बर्तन आदि। साथ ही यहां जल निकासी की व्यवस्था भी कई गई थी। मकानों का निर्माण कच्ची ईंटों से किया जाता था। जिससे इस नगर के समृद्ध होने का पता चलता है।

References: Internet & Competitive books.